अध्याय – द्वितीय

सम्बंधित साहित्य का पुनरवलोकन

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
2.1	परिचय	16
2.2	सहित्य पुनरवलोकन के लाभ	16
2.3	शोधकार्य	17

सम्बंधित साहित्य का पुनरवलोकन

2.1 परिचय:

साहित्य का पुनरवलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पद है किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नींव के सामान होता है जिस पर भविष्य की ईमारत खड़ी होती है

समस्या से सम्बंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसन्धान आधार एवं गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण करक है प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में ,चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या इसमें साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रारंभिक चरण है क्षेत्रीय अध्यनों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है .

समस्या से सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसन्धान का प्राथमिक आधार तथा अनुसन्धान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है.

2.2. साहित्य पुनरावलोकन के लाभ :-

1. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसन्धानकर्ताओं द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका हैं .वह पुनः किया जा सकता है .
2. पूर्व साहित्य पुनरवलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसन्धान के विधानों की रचना के सम्बन्ध में अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है.
3. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन में अन्य सम्बंधित नवीन समस्या का पता लगता है .

4. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है की अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसन्धान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है.
5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है .

2.3. शोध कार्य

इस विषय पर सम्बंधित शोध कार्य निम्नानुसार है :-

1. Comparative Study of Self Confidence and Academic Achievement of Children of SOS Children's Village having Low and High Anxiety. Anita Bangarwa 2008-09

2. Study Related to SOS children's village Gupta (1978)" Self-concept, dependency and Adjustment pattern of abandoned institution realized preadolescents. "

3. नारायना राव :- (1967) ने एक अध्ययन में समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध का अध्ययन किया । अपने अध्ययन में राव ने यह देखा है कि समायोजन सम्बंधी समस्याएं निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अधिक सम्बंधित है।

4. आर.डी.पाठक (1972) ने अपने एक अध्ययन में देखा है कि एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले बालकों का समायोजन सामान्य लोगो की अपेक्षा बहुत भिन्न होता है।

5. एम.वाय.डी. (1971) ने अपने एक अध्ययन के द्वारा यह देखा कि दुर्बल आत्म प्रतिमा हीनता की भावना, परिवार के प्रति अरूचि आदि कुछ ऐसे कारक है जो किशारें के समायोजन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं ।

6. डी.एन. श्रीवास्तव (1975) ने शैक्षिक उपलब्धिा और समायोजन सम्बंधित अध्ययन में ट्राइवेरिएट एनालिसिस के आधार पर यह देखा कि ये चर एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से

सम्बंधित है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि उच्च समायोजन उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है।

7. हेरलॉक (1975) के अध्ययन मे यदि स्कूल का वातावरण आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला हो तो छात्रों का समायोजन औसत से अधिक रहता है और उपलब्धि भी औसत से अधिक होती हैं। स्कूल या कॉलेज के अनुपयुक्त सांवेगिक परिस्थिति से छात्रों में चिंता एवं घबराहट उत्पन्न होती है और उनकी शैक्षिका.उपलघि कम दिखाई देती है।

8. सिमोण्डम (1975) के अध्ययन में यह पाया गया कि जिन बच्चों के शैक्षिक उच्च अंक, माता-पिता की मनोवृत्ति बच्चों के प्रति अनुकुल होती है उनका घरेलू समायोजन उत्तम रहता हैं ।

9. मुरलीधरन बैनजी (1976) के अध्ययन के द्वारा यह स्पष्ट हुआ है कि कक्षा में जिन विद्यार्थियों की उपस्थिति जितनी अधिक होती है । उनका समायोजन उतना ही अच्छा होता है । ऐसे बालकों का विद्यालयी संमायोजन अच्छा होता है।

10. सुनीता पी (1986) के अध्ययन में लड़कियॉ घर में लड़कों की अपेक्षा अधिक समायोजित है। लड़के संवेगात्मक रूप से लड़कियों से अधिक समायोजित है।

11. शिक्षाकोश :- उपेक्षित बच्चे वो है, जिन्हे माता-पिता अभिभावक, समाज, सुरक्षा, अनुशासन व मनोवैज्ञानिक दिशा निर्देश न दे सकें ।